उपाय... समाधान... आशा....

- रूस के वैज्ञानिक श्री शिरोविच ने एक पुस्तक में लिखा है कि गाय के घी को अग्नि में डालने से उससे उत्पन्न धुआँ परमाणु विकिरण के प्रभाव को बड़ी मात्रा में दूर कर देता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रक्रिया 'यज्ञ' के नाम से जानी जाती है।
- विभिन्न रोगों के जन्तुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुलभ पद्धति अन्य कोई नहीं है।
  -एम.मॉनियर, चिकित्सा शास्त्री (एन्शिएण्ट हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन)
- शक्कर के दहन से उत्पन्न धुएँ में पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति है। इससे क्षय रोग, चेचक हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट हो जाते हैं।
  -वैज्ञानिक ट्रिलवर्ट (फ्रांस)
- केसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी समाप्त हो जाते हैं। - डॉ. कर्नल किंग
- मुनक्का, किशमिश, मखाणे आदि से हवन करने से सन्निपात ज्वर, टाईफॉइड के कीटाणु मात्र घण्टे में नष्ट हो जाते हैं। - डॉ. डीलिट
- ३६'×२२'×१०' = लगभग ८००० घन फीट के एक हॉल में एक समय हवन करने से कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का ७७.५% भाग नष्ट हो गया, इतना ही नहीं इस प्रयोग १६% हानिकारक कीटाणु नष्ट हो गए।
  - फर्ग्युसन कॉलेज पूणे के जीवाणु शास्त्रियों का प्रयोग
- अमेरिका, चिली, पॉलैण्ड, जर्मनी आदि देशों में अग्निहोत्र (हवन) की लोकप्रियता बढ़ रही है।
- विश्व के अनेक देशों में रोगों को दूर करने के लिए, प्रदूषण को दूर करने के लिए, तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए यज्ञ चिकित्सा (Homa Therapy) का प्रचलन बढ़ रहा है।

यज्ञ के विषय में वैदिक, शास्त्रीय प्रमाण

१. समिधाओं से यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करके उसे घृत से प्रबुद्ध करो और उस प्रदीप्त अग्नि में उत्तम सामग्री की आहुति दो। यजुर्वेद ३-१

२. जब अग्नि में सुगंधित पदार्थों का हवन होता है तभी वह यज्ञ वायु आदि पदार्थों को शुद्ध करता है तथा शरीर और औषधि आदि पदार्थों की रक्षा करके अनेक प्रकार के रसों को उत्पन्न करता है, उन शुद्ध पदार्थों के भोग से मनुष्यों के ज्ञान, विद्या और बल की वृद्धि होती है। यजुर्वेद १-१

३. जो यज्ञ से शुद्ध किये हुए अन्न, जल, वायु आदि पदार्थ हैं वे सब की शुद्धि करके बल, पराक्रम तथा दीर्घायु के लि समर्थ होते हैं। इसलिए सब मनुष्यों को यज्ञ कर्म का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए। यजुर्वेद १-२०

४. जैसी यज्ञ करने से वायु और जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है वैसी अन्य प्रकार से नहीं हो सकती। - ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

५. यज्ञकुण्ड में डाली हुई सामग्री दुःख देने वाले रोगों को ऐसे बहाकर ले जाती है जैसे नदी झाग को बहाकर ले जाती है। - अथर्ववेद १-८-१

६. गाय के घी के साथ हवन की सामग्री यज्ञ कुण्ड में जलकर विशेष शक्तिशाली बनकर दूषित वायुमंडल के ९९ प्रकार के दुर्गुणों को सरलता से नष्ट कर देती है। ऋग्वेद ९-८४-१३

७. शुभ दिनों का सम्पादन यज्ञ के द्वारा किया जाता है। यजुर्वेद १९-६

८. अन्तरिक्ष में जो विविध प्रकार के वायु तत्वों का स्तर है उनका बिगाड़ मत करो, नष्ट मत करो ये तत्व हमारे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी है। यजुर्वेद ५-४३

।। ओ३म् ।।

यज्ञ क्या और किसलिए?

''स्वर्ग कामो यजेत'' (शतपथ ब्राह्मण)

''स्वर्ग अर्थात् सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, पुत्र, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति आदि की इच्छा करने वाला यज्ञ करें''

ज्ञानेश्वरार्य : हेमन्त कुमार आर्य

प्रकाशक

आचार्य हेमन्त आर्य

स्नातकोत्तर - वैदिक वाङ्मयम्, योग एवं जीवन विज्ञान

अजमेर (राजस्थान) आर्यावर्त्त

सम्पर्क सूत्र - +91-9828650092

Email : hkaryaajm1@gmail.com

समस्त विश्व के समस्त मनुष्यों की समस्त समस्याओं का एक मूल कारण

पर्यावरण प्रदूषण

साम्प्रत काल में पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाभयंकर भस्मासुर ने मात्र हवा ही नहीं अपितु पानी, पृथ्वी, ध्वनि, प्रकाश, आकाश आदि समस्त महत्त्वपूर्ण संसाधनों को अपनी चंगुल में फँसा लिया है। दूषित भौतिक पदार्थों से उत्पन्न अन्न, वनस्पति, शाक, कन्द, मूल, फल, फूल, औषध आदि खाद्य पदार्थ दूषित हो गए हैं। इन दूषित खाद्यानों के उपयोग से मनुष्य के शरी में बनने वाली रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य-रज आदि धातुएँ भी अशुद्ध, निकृष्ट तथा निर्बल बन चुकी हैं। इन तमाम धातुओं, रसों के आधार से काम करने वाले मन, बुद्धि आत्मा भी दोषयुक्त विकृत बन गए हैं। परिणाम स्वरूप मनुष्यों के विचार, वाणी तथा व्यवहार दोषयुक्त बन गए हैं। इसका प्रभाव, अन्तिम प्रभाव यह है कि आज व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में परस्पर प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा, सद्भाव, संगठन, त्याग, धैर्य, क्षमा, सहनशक्ति, सेवा, दया, निष्कामता की भावना समाप्तप्रायः हो गई और इससे उलटा परस्पर - स्वाथ, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, संशय, चिन्ता, विगठन, अन्याय, छल-कपट, असहिष्णुता, क्रूरता, अभिमान, उच्छृंखलता आदि बढ़ रहे हैं।

आओ इन समस्त बुराइयों के मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाराक्षस को नष्ट करने वाले अमोघ शस्त्र यज्ञ (हवन) का प्रयोग करें।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के कारणों के विषय में

क्या आप जानते हैं?

- सामान्य रूप से हवा में २१% ऑक्सीजन, ७८% नाईट्रोजन, ०.०३% कार्बनडाय ऑक्साईड तथा लगभग १% अन्य जहरीली गैसों के मिलने के कारण इसकी संरचना में परिवर्तन होने से वायु प्रदुषण होता है।
- ६०% वायु प्रदूषण मोटर वाहनों से और ३५% बड़े तथा मध्यम उद्योगों से फैलता है।
- एक मोटर वाहन ९७० कि.मी. की यात्रा में उतना ऑक्सीजन फूँक डालता है जितना कि एक व्यक्ति को एक वर्ष के लिए आवश्यक होता है।
- किसी भी स्वचालित वाहन में एक गैलन पेट्रोल/डीजल के दहन से तीन पाऊंड नाइट्रोजन ऑक्साईड वायु निकलती है जो कि ५ से २० लाख घनफीट हवा को प्रदूषित कर देती है।
- प्राकृतिक सन्तुलन के लिए पृथ्वी पर भूमि के ३३ % भाग पर वन होना अति आवश्यक है। हमारे देश में वर्तमान में मात्र १९% भूमि पर वन हैं।
- दिल्ली जैसे महानगरों में लोग जाने-अनजाने प्रति दिन २० सिगरेटों के धुएँ में जितना विष होता है उतना विष प्रदूषित वायु के कारण अपने फेफड़ों में खींच लेते हैं।
- मनुष्य एक दिन में औसतन २९,६०० बार श्वसन क्रिया करता है और इस क्रिया में १६ कि.ग्रा. ऑक्सीजन आवश्यक होता है।
- एक व्यक्ति एक वर्ष में १२ टन कार्बन डाय ऑक्साईड उच्छ्वास से वातावरण में बाहर फैंकता है।

- एक बड़ा पूर्ण विकसित वृक्ष एक मनुष्य के सम्पूर्ण आयुष्य के लिए जितनी आवश्यक होती है उतनी मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है और वह हवा, पानी, ध्वनि के प्रदूषण तथा धूल को रोकता है।
- वायु प्रदूषित होने के कारण खाद्य पदार्थ पोषक तत्त्वों से रहित, अशुद्ध और शक्तिहीन बन गए हैं।
- प्रदूषण के कारण पौधों की कार्बनडाय ऑक्साईड शोषण करने की तथा पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ने की प्राकृतिक प्रक्रिया मन्द हो रही है।
- पिछले कई वर्षों से फल, सब्जी, खाद्यान्न आदि का परीक्षण करने पर पता चला है कि इन सबमें जहरीले कीटनाशक रसायनों के अंश विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) द्वारा निर्धारित मात्रा से कई गुना अधिक पाया जाता है।
- पृथ्वी पर होने वाली कुछ रासायनिक क्रियाओं से पर्यावरण में फैलने वाले प्रदूषण के कारण आकाश स्थित ओजोन वायु की परत में एक बड़ा छिद्र हुआ है यदि इस गति से छिद्र होते रहेंगे तो पैराबैंगनी किरणों (Ultraviolet Rays) को रोकना संभव नहीं रहेगा और इसका परिणाम यह होगा कि लोग कैन्सर, आँखों में ग्रन्थि आदि भयंकर रोगों से ग्रस्त होंगे तथा वृक्ष वनस्पति भी प्रभावित होंगे।
- बढ़ते जा रहे वायु प्रदूषण पर यदि नियन्त्रण नहीं किया गया तो कुछ वर्षों बाद ऐसी स्थिति बन जाएगी कि मनुष्यों को अपने साथ प्राणवायु का सिलिंडर बांधकर रखना होगा जिससे शुद्ध वायु ली जा सके। जैसे आज अशुद्ध जल के कारण खनिज जल (Mineral Water) की बोतल का तथा नाक को ढ़कने के लिए कपड़े की पट्टी (Mask) का प्रचलन हो गया है।
- प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरूद्ध यदि सामूहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जाएगा तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पाएगा।